Dr. Priti Ranjan

H.D Jain College (Ara)

B.A Part-III

Paper- VI

Topic- Indian National Congress.

part - II

तरीकों से ही आजादी हासिल की जा सकती है। धीरे-2 क्रांतिकारी आतंकवाद की दो धाराएँ विकसित हुईं - एक पंजाब, उत्तर प्रदेश और तथा दूसरी बंगाल में। ये दोनों धाराएँ सामाजिक बदलाव से उपजी नई सामाजिक शक्तियों से प्रभावित हुईं। इनमें एक थी प्रथम विश्व युद्ध के बाद उपजा मजदूर संगठन। क्रांतिकारियों को इस वर्ग की क्रांतिकारी क्षमता का अंदाज था। वे इसका इस्तेमाल राष्ट्रीय क्रांति के लिए करना चाहते थे।

अक्टूबर 1924 में इन क्रांतिकारी युवकों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ और "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन" का गठन किया गया। इसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना और एक संघीय गणतंत्र 'संयुक्त राज्य भारत' की स्थापना करना था। एसोसिएशन ने अपनी शाखाएं बिहार, पंजाब, दिल्ली, मद्रास और अन्य स्थानों पर खोला दिया।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने हथियार जुटाने एवं कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के लिए धन की आवश्यकता महसूस की। 9 अगस्त 1925 ई० को इस व्यक्तियों ने लखनऊ के पास एक गाँव काकोरी में 8 डाउन ट्रेन को रोक लिया और रेल विभाग का खजाना लूट लिया। सरकार इस घटना से काफी क्रोधित हो गयी। भारी संख्या में युवकों को गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया। आगे चलकर 9 और 10 दिसम्बर 1928 को फिरोजशाह कोटला मैदान (दिल्ली) में उत्तर भारत के युवा क्रांतिकारियों की एक बैठक हुई। जिसमें संगठन का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रखा गया।

1928 ई० के फरवरी तथा मार्च मास में एक सर्वदल सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में एक समिति मोतीलाल नेहरू के सभापतित्व में नियुक्त की जिसका कार्य भारत का संविधान बनाना था। रिपोर्ट दिसम्बर 1928 में सर्वदलीय राष्ट्रीय प्रतिनिधि सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया जाना था, जिसका कोई धर्म नहीं था। इसमें मुसलमान एवं हिन्दुओं के लिए अल्पसंख्यक कहलाने वाले प्रान्त के लिए स्थानों की आरक्षण की व्यवस्था थी। लेकिन मुसलमानों ने इसे अस्वीकार कर दिया।

दिसम्बर 1929 ई० में कांग्रेस का अधिवेशन जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में रावी नदी के किनारे लाहौर में हुआ। इसमें नेहरु जी ने एक प्रस्ताव पास करके पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति को अपना लक्ष्य घोषित किया। 31 दिसम्बर 1929 ई० के तिरंगे झंडे को फहराया गया। उसने सारे देश में अगले वर्ष 26 जनवरी 1930 ई० को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। उसी सविनय अवज्ञा आन्दोलन का निर्णय लिया गया मगर कार्यक्रम तैयार न होने के कारण इसका दायित्व गाँधी जी पर छोड़ दिया गया। गाँधी जी ने 2 मार्च 1930 ई० को वायसराय लार्ड इर्विन को एक ग्यारह सूत्रीय मांग प्रस्तुत की। इन मांगों में नशाबंदी, भूमि कर में आधा कमी, नमक कर पूर्ण समाप्त करना, प्रशासनिक व्यय कम करना, विदेशी वस्त्र के आयात पर पूर्ण प्रतिबंध प्रमुख थे। गाँधी जी ने स्पष्ट कहा कि अगर माँगे नहीं मानी जायी तो 12 मार्च से आन्दोलन छेड़ देंगे। सरकार ने मांगे नहीं मानी।

12 मार्च 1930 ई० को द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत गाँधी जी अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से समुद्र तट पर स्थित डांडी नामक स्थान तक की दो सौ मीलों की लंबी यात्रा से की। डांडी पहुँचकर गाँधी जी स्वयं नमक तैयार किया। सरकार ने कड़ा रुख अपनाया और गाँधी जी, सरदार पटेल, नेहरु आदि सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गए। गाँधी जी के बाद सरोजिनी नायडू ने इस कार्यक्रम को आगे बढ़ायी। सैकड़ो लोग घायल हुए तथा यह आन्दोलन जन आन्दोलन का रुप ले लिया। यह आन्दोलन भारत के सुदूर उत्तर-पश्चिम कोने में पहुँच गया। देशव्यापी आन्दोलन को देखते हुए सरकार ने स्थिति की गंभीरता को समझा तथा लार्ड इर्विन ने जो उस समय भारत के वायसराय थे, प्रथम गोलमेज सम्मेलन बुलाने की घोषणा की, सम्मेलन में कांग्रेस पार्टी ने भाग नहीं लिया। अन्य 86 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें 3 ग्रेट ब्रिटेन, 16 भारतीय देशी रियासतों और शेष 57 ब्रिटानी प्रतिनिधि थे। ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों में सर तेज बहादुर सप्रू, श्री निवास शास्त्री, डॉ. आम्बेडकर आदि जैसे व्यक्ति थे। यह सम्मेलन असफल रहा क्योंकि कांग्रेस उस समय देश की सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था थी।

~~17 फरवरी को गाँधी जी एवं~~ ~~सवि~~ सविनय अवज्ञा 1931 ई० में अस्थायी तौर पर रुक गया गाँधी जी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रुप में द्वितीय गोलमेज में भाग लेने लंदन पहुँचे। 7 सितम्बर, 1931 ई० से सम्मेलन आरंभ हुआ। सम्मेलन में गाँधी जी के अलावा, हरिजन प्रतिनिधि, मुस्लिम लीग, देशी राजा एवं हिन्दू महासभा के भी सदस्य थे।

महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप का प्रतिपादन किया और सुरक्षा बलों व वैदेशिक मामलों का पूर्ण नियंत्रण सहित स्वराज्य की मांग की, लेकिन इस मांग पर कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। साम्प्रदायिकता की समस्या ज्यों की त्यों रही। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1 दिसम्बर, 1931 ई० को समाप्त हो गई। यह सम्मेलन पूर्णतया असफल रहा।

28 दिसम्बर 1931 ई० को महात्मा गाँधी स्वदेश लौटे और यहाँ की दशा देखकर दुखी हो गए। उन्होंने लार्ड वैलिंगटन से बिना शर्त मिलना चाहा मगर उसने मिलने से इन्कार कर दिया। अत: 3 जनवरी, 1932 को गाँधी जी ने अग्नि परीक्षा के लिए राष्ट्र का आह्वान किया। 4 जनवरी, 1932 ई० को गाँधी जी एवं ~~तत्कालीन~~ तात्कालिन कांग्रेस अध्यक्ष पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस को असवैधानिक घोषित कर दिया गया है, चारों तरफ आन्दोलन तेज हो गई।